इस शैली में किसी घटना, विचार या समस्या का वर्णन समयानुसार न करके सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य/सूचना से शुरू होता है। अतः इस शैली में क्लाइमेक्स अंत में नहीं, बल्कि आरंभ में ही आ जाता है। उल्टा पिरामिड शैली में कोई निष्कर्ष नहीं होता।

6. रेडियो समाचार की भाषा के विषय में अपने विचार व्यक्त करें। CBSE SQP 2025

उत्तर रेडियो एक श्रव्य माध्यम है। अतः इसके समाचार की भाषा अनिवार्य रूप से सरल, सहज और आम बोलचाल पर आधारित होनी चाहिए। इसमें वाक्यों को छोटा, सीधा और स्पष्ट रखा जाता है, ताकि श्रोता उसे एक बार सुनने पर तुरंत समझ सकें, क्योंकि एक बार बोली गई बात दोबारा उपलब्ध नहीं होती। भाषा में भ्रम से बचने के लिए सक्रिय क्रियाओं और वर्तमान काल का प्रयोग करना आवश्यक है, जो समाचार को तात्कालिकता और ताजगी प्रदान करता है। रेडियो समाचार की भाषा को संवादात्मक होना चाहिए, जो सीधे श्रोता से जुड़कर संदेश को प्रभावी तरीके से उसके मस्तिष्क तक पहुँचाए।

7. टी.वी. खबरों के विभिन्न चरणों के बारे में समझाइए।

अथवा **टी.वी. पर प्रसारित होने वाली सूचनाएँ किन-किन चरणों से होकर गुजरती हैं? किन्हीं चार के बारे में विस्तार से लिखिए।** CBSE 2023

उत्तर टी.वी., प्रिंट, रेडियो आदि माध्यमों पर खबर देने का मूल आधार सबसे पहले सूचना देना होता है। टी.वी. द्वारा भी ये सूचनाएँ विभिन्न चरणों द्वारा दर्शकों तक पहुँचती हैं। ये चरण निम्नलिखित हैं

(i) **फ्लैश बैक या ब्रेकिंग न्यूज़** इसमें कम-से-कम शब्दों में केवल सूचना के रूप में कोई बड़ी खबर तुरंत दर्शकों तक पहुँचाई जाती है।

(ii) **ड्राई एंकर** इसके अंतर्गत एंकर खबर के बारे में दर्शकों को सीधे-सीधे बताता है कि कहाँ, क्या, कब और कैसे हुआ।

(iii) **फोन इन** इसमें रिपोर्टर घटनास्थल पर उपस्थित होता है और वहाँ से ज्यादा-से-ज्यादा जानकारियाँ दर्शकों को बताता है।

(iv) **एंकर विजुअल** जब घटना के दृश्य या विजुअल मिल जाते हैं, तब उन दृश्यों के आधार पर खबर लिखी जाती है, जो एंकर पढ़ता है।

(v) **एंकर बाइट** बाइट अर्थात् कथन का टेलीविजन पत्रकारिता में बड़ा महत्त्व है। टी.वी. में किसी भी खबर की पुष्टि करने के लिए उससे संबंधित बाइट दिखाई जाती है।

(vi) **लाइव** किसी खबर का घटनास्थल से सीधा [illegible]

(iv) निम्नलिखित, उपरोक्त, अधोहस्ताक्षरित और क्रमांक आदि शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए।

(v) गैर-जरूरी विशेषणों, सामासिक और तत्सम शब्दों, [illegible] उपमाओं आदि से बचना चाहिए।

9. इंटरनेट पत्रकारिता से आप क्या समझते हैं? भारत में इंटरनेट पत्रकारिता की क्या स्थिति है?

अथवा **इंटरनेट पत्रकारिता से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।** CBS[illegible]

उत्तर इंटरनेट पर समाचार-पत्र का प्रकाशन अथवा खबरों का आदान-प्र[illegible] वास्तव में इंटरनेट पत्रकारिता है। इंटरनेट पर हम किसी भी [illegible] समाचारों, लेखों, चर्चा-परिचर्चा के साथ वाद-विवादों, फीचर अ[illegible] कार्य कर सकते हैं, इसे ही इंटरनेट पत्रकारिता कहते हैं। इसी पत्र[illegible] को वेब पत्रकारिता भी कहा जाता है।

भारत में इंटरनेट पत्रकारिता का अभी दूसरा दौर चल रहा है, जबकि [illegible] स्तर पर इंटरनेट पत्रकारिता का तीसरा दौर चल रहा है। भारत [illegible] प्रथम दौर वर्ष 1993 से तथा दूसरा दौर वर्ष 2003 से प्रारंभ मान[illegible] है। भारत में यथार्थ रूप से 'रीडिफ डॉटकॉम', 'इंडिया इंफोलाइन[illegible] 'सिफी' जैसी कुछ साइटें वेब पत्रकारिता का कार्य कर रही हैं। '[illegible] को भारत की पहली साइट कहा जा सकता है, जो गंभीरता के [illegible] इंटरनेट पत्रकारिता कर रही है। वेबसाइट पर विशुद्ध पत्रकारिता का श्रेय तहलका डॉटकॉम को जाता है।

10. रेडियो के संदर्भ में श्रव्य माध्यमों की दो सीमाएँ बताइए। किसी सीमा से पार पाने का उपाय भी बताइए।

अथवा **रेडियो संचार का कैसा माध्यम है? इसकी कोई दो सीमाएँ लिखें।** CBSE SQP 20[illegible]

उत्तर रेडियो संचार का एक तरफा माध्यम है, इसलिए संदेशों के संबंध में [illegible] प्रतिक्रिया प्राप्त नहीं की जा सकती है। चूँकि श्रोता का ध्यान केवल [illegible] पर होता है, इसलिए रेडियो के माध्यम से संचारित संदेश केवल उन लो[illegible] तक पहुँच सकते हैं, जो ध्यानपूर्वक और बुद्धिमानी से इसे सुनते हैं। रेडियो से संदेश प्राप्त करने के लिए बहुत सावधान [illegible] संदेश का कुछ हिस्सा ही [illegible]